13

मत्ती को उत्तर

कुलुस्सियों 3:1517

3:1–14 में पौलुस ने कुलुस्सियों को स्वर्ग की ओर आत्मिक वस्तुओं को देखने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वे सांसारिक रुचियों में मसीह के साथ मर गए थे। इसलिए उन्हें कुछ शारीरिक इच्छाओं और ढंगों को उतारकर मसीह में पाए जाने वाले मसीह के नये गुणों को पहन लेना चाहिए था। इन निर्देशों के बाद पौलुस ने उन्हें आत्मिक गीत गाते हुए एक-दूसरे को प्रोत्साहित करते और सिखाते हुए परमेश्वर का आभार व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित किया (3:15–17)। यह सब कुछ यीशु मसीह की इच्छा के अनुसार होना था।

उसकी शांति पाना (3:15)

[15]मसीह की शान्ति जिस के लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो, तुम्हारे हृदय में राज करे, और तुम धन्यवादी बने रहो।

''मसीह की शान्ति ... तुम्हारे हृदय में राज करे'' (3:15)

शांति (*eirēnē*) मन की शांति, भीतरी संतुष्टि और आत्मा का शांत गुण है। इसे सो रहे, मासूम बालक के चेहरे पर देखा जा सकता है, जो संसार की चिंताओं और परेशानियों से मुक्त है। भीतरी शांति मन की वह शांति है, जो हृदय के अन्दर होती है और आवश्यकता यह है कि बाहर की परिस्थितियों के कारण होती है।

यीशु की शांति को मानने के लिए मसीही लोगों का गम्भीर प्रयास आवश्यक है (रोमियों 14:19; 2 तीमुथियुस 2:22; 1 पतरस 3:11)। यह उन्हें मिलती है, जो उसे अपने मनों पर शासन करने देते हैं और अपनी सोच को नियन्त्रण में रखते हैं। हम पर्दा गिराकर घर में रौशनी आने से रोक सकते हैं, या उसे खोलकर रौशनी अंदर आने दे सकते हैं। इसी प्रकार से हम यीशु की शांति को अन्दर आने देने के लिए अपने हृदयों को खोलना चुन सकते हैं। पौलुस ने फिलिप्पियों को आश्वस्त किया कि प्रार्थना में परमेश्वर के पास उनकी चिंताओं और धन्यवाद को साझा करके और वह करके जो उन्होंने पौलुस से सीखा था, उन्होंने मसीह के द्वारा परमेश्वर की शांति को अपने हृदयों और मनों की रखवाली करने देनी थी (फिलिप्पियों 4:6, 7, 9)।

यीशु ने इस बात पर अफ़सोस किया कि यरूशलेम के लोगों ने उन बातों को नहीं जाना, जिनसे शांति मिलती है (लूका 19:42)। उसने परेशानियों से भरे संसार में अपने चेलों को अपनी शांति देने की प्रतिज्ञा की (यूहन्ना 16:33), परन्तु वह शांति नहीं जो संसार देता है (यूहन्ना 14:27)। कई बार हो सकता है कि संसार शारीरिक शांति दे दे; परन्तु इससे वह शांति नहीं मिल

सकती, जिसे यीशु देता है। उसने उन्हें विश्राम देने की प्रतिज्ञा की जो उसका जुआ ले लेते और उससे सीखते हैं (मत्ती 11:28-30)।

मसीह की शांति परमेश्वर के साथ शांति, दूसरों के साथ शांति और अपने साथ शांति तिहरी है। यीशु ने अपने चेलों को अपने जीवन के द्वारा, शिक्षा, मृत्यु और पुनरुत्थान के द्वारा परमेश्वर की शांति होने की आशीष दी (कुलुस्सियों 1:20; रोमियों 5:1)। यह उन्हें मिलती है, जो मसीह में है (2 कुरिन्थियों 5:17-21) अर्थात जो बपतिस्मे के द्वारा मसीह में आ गए हैं (रोमियों 6:3; गलातियों 3:27)।

मसीही लोगों के लिए और सब लोगों के साथ शांति से रहना आवश्यक है (2 कुरिन्थियों 13:11; 1 थिस्सलुनीकियों 5:13; इब्रानियों 12:14; याकूब 3:18)। यीशु ने व्यवस्था की बाधा को तोड़कर इसे सम्भव बनाया है (इफिसियों 2:14, 15)। मसीही लोगों के लिए मसीह की एक देह में एक-दूसरे के साथ एक होकर रहना आवश्यक है (इफिसियों 2:16; 4:1-4)। मसीह की शांति को बांटने के लिए, मसीही लोगों में शांति लाने की ज़िम्मेदारी हर सदस्य की अपनी है। वह केवल व्यक्तिगत शांति ही नहीं, बल्कि विश्वासियों की पूरी देह को भी शांति देता है। जहां उसकी शांति होती है वहां पर उसके चेलों में एकता पाई जाएगी।

यीशु की ओर से मिलने वाली शांति दोष, भीतरी उलझन, गड़बड़ी और उस पाप को निकालने से मिलती है, जिसने आत्मा को गंदा कर दिया है। सम्पूर्ण और स्थाई शांति यीशु से यह सीखने से मिलती है कि परमेश्वर, दूसरों और अपने साथ शांति से कैसे रहता है।

मसीह की शांति मसीही लोगों के हृदय में राज (*brabeuō*) करती होनी आवश्यक है। यही शब्द जो केवल यहां है, यूनान धर्मशास्त्र में है, चाहे यह मिश्रित शब्द *katabrabeuetō* (2:18 में "व्यर्थ फूलता") मिलता है। नये नियम के इस्तेमाल के बाहर इसका अर्थ "मुख्य [तया] 'मुकाबलों में इनाम' तो सामान[तया] निर्णय, न्याय, फैसला, शासन के द्वारा गतिविधि के नियन्त्रण में होना" है।[1] इसका अर्थ मसीही लोगों के मसीह की शांति को वह निर्णायक कारक होने देने के अर्थ में, जिस में उनके जीवनों पर नियन्त्रण होता है "मध्यस्थ होना"[2] भी हो सकता है। झगड़ों के होने पर शांति की इच्छा से झगड़ा निपट जाना चाहिए। मसीह की शांति को अधिकार करने देकर हम उन झगड़ों और समस्याओं को खत्म कर सकते हैं, जो भाइयों में उत्पन्न होकर मण्डली की शांति के लिए खतरा बनते हैं। समाधान मिल सकते हैं यदि हृदयों पर साथी मसीही लोगों के साथ शांति से रहने की इच्छा का नियन्त्रण और प्रेरणा हो।

पौलुस की इच्छा परमेश्वर की शांति को पूरी कलीसिया में फैलाने की थी। कुलुस्से के मसीही लोगों को केवल भीतरी शांति और परमेश्वर के साथ शांति भी पाने की आवश्यकता नहीं थी। उन्हें मसीह की देह में दूसरे लोगों के साथ शांति यानी मेल रखने की आवश्यकता भी थी।

"जिसके लिए तुम एक देह होकर बुलाए भी गए हो" (3:15)

कुलुस्से के लोगों को मसीह की एक देह में शांति का अपना आश्रय ढूंढ़ना था (रोमियों 12:5), जिसमें उन्हें बुलाया गया था। जिसके लिए वाक्यांश में "के लिए" (*eis*) का अर्थ "में" है। पौलुस का संदेश यह था कि उन्हें एक देह में मेल "में" बुलाया गया था। यीशु लोगों को एक देह में बुलाता है न कि बहुत सी देहों में; जिस कारण हमें एक-दूसरे के साथ शांति या

सुलह से रहना चाहिए। यीशु लोगों को अशांति और झगड़े में नहीं बुलाता है बल्कि लोगों की एक ही हुई देह में बुलाता है। फूट, झगड़े, लड़ाई, ईर्ष्या और दल बनाने की सोच शांति को भंग करके ''एक देह'' को भागों में बांटती है। झगड़ा और फूट ऊपर से नहीं आते; यानी वे यीशु की ओर से या पिता की ओर से नहीं आते, बल्कि शैतानी स्रोतों से आते हैं (याकूब 3:14-16)। शांति को पाया तभी जा सकता है यदि वे लोग, जिन्हें विश्वासियों की एक देह में बुलाया गया है 3:8, 9 में वर्णित बुराइयों को निकालकर 3:12-14 में वर्णित गुणों को आधार बनाएं।

''एक देह'' के इस हवाले में अन्य आयतों की तरह पौलुस ने यहां पर यूनानी सर्वनाम autou (''उसकी देह'') या निश्चित यूनानी उपपद (''द बॉडी'') इस्तेमाल नहीं किया। इसके बजाय उसने यह ज़ोर देना चाहा कि विश्वासियों को एक इकाई में, अर्थात एक देह में बुलाया गया है।

धार्मिक अगुओं ने लोगों को दलों, और फूट, उलझन और झगड़े में बुलाया है (प्रेरितों 20:29, 30)। यीशु ऐसे झगड़े नहीं चाहता है; वह तो एकता और एक होने का इच्छुक है (यूहन्ना 17:20-23)। वह अपने चेलों को बंटे हुए, जातिभेद वाले समाज में से एक देह में शांति में बुलाता है। यह भेद उन तूफ़ानी संगठनों से जो मानवीय सम्बन्धों को नष्ट कर देते हैं एक आश्रय होना चाहिए।

''एक देह'' कुलुस्सियों की पत्री में केवल यहां पर मिलता है। 1:18, 24 में भी पौलुस ने लिखा कि कलीसिया देह है। यीशु ने अपनी कलीसिया को (मत्ती 16:18), जो कि एक कलीसिया (इफिसियों 4:4; देखें कुलुस्सियों 1:18) सब लोगों को अपनी ओर खींचने के उद्देश्य से (यूहन्ना 12:32) बनाया। वह एक करने वाला वह बल है, जो लोगों को एक देह में एक कर सकता है (रोमियों 12:5; 1 कुरिन्थियों 10:17; 12:12, 20; इफिसियों 2:16)। हम उसमें और उसकी एक देह में, बपतिस्मा लेने के द्वारा प्रवेश करते हैं (रोमियों 6:3; 12:5; 1 कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:27)। इस देह में हम एक हो जाते हैं (गलातियों 3:28)। मसीही लोगों के रूप में हमारा लक्ष्य एक-दूसरे के साथ अपने सम्बन्धों के व्यवहार तय करने वाला कारक यीशु की शांति को बनाना चाहिए।

यीशु ने ''एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा'' की बात की (यूहन्ना 10:16) और सब विश्वासियों के लिए प्रार्थना की कि वे ''एक'' हों (यूहन्ना 17:20, 21)। आरम्भिक कलीसिया का आरम्भ ''एक मन,'' ''एक चित्त और एक मन'' वाले विश्वासियों के साथ हुआ था (प्रेरितों 2:46; 4:32)। अपनी सभाओं में वह ''सब एक चित्त'' होते थे (प्रेरितों 5:12; देखें रोमियों 15:6)। विश्वासियों में फूट से बचा जाना आवश्यक था (1 कुरिन्थियों 1:10; रोमियों 16:17)।

बुलाए जाने की अवधारणा मसीही विचार में महत्वपूर्ण है। आयत 15 में यूनानी शब्द *eklēthēte* संकेत देता है कि मसीही लोगों की बुलाहट सम्पूर्ण थी। वे उन लोगों में से थे जो ''बुलाए गए'' (*klētos*; रोमियों 1:6; 8:28; 1 कुरिन्थियों 1:24)।

सुसमाचार सारे संसार को सुनाया जाना आवश्यक है (मरकुस 16:15), ताकि हर किसी को बुलाया जा सके (2 थिस्सलुनीकियों 2:13, 14)। परन्तु सब लोग चुने हुए नहीं हैं। कुलुस्से के मसीही लोगों ने उस बुलाहट को स्वीकार करने को चुना था। जो लोग सुसमाचार की आज्ञा मानने से इनकार करते हैं, उन्हें दण्ड दिया जाएगा, जबकि वे जो आज्ञा मानते हैं, उद्धार पाएंगे।

''और तुम धन्यवादी बने रहो'' (3:15)

इस छोटे से पत्र में पौलुस ने बार-बार धन्यवादी या कृतज्ञ होने का संकेत दिया (1:3, 12; 2:7; 3:15, 16, 17; 4:2)। यूनानी धर्मशास्त्र में विशेषण शब्द *eucharistoi* (''धन्यवादी होना'') केवल यहीं पर मिलता है, परन्तु इसी शब्द का क्रिया रूप *eucharisteō* (''धन्यवाद'') नये नियम में इस्तेमाल हुआ है और अन्य यूनानी साहित्य में कई बार मिलता है। इसका इस्तेमाल आभार मानने की स्थिति से कृतज्ञ होना है। कुलुस्से के लोगों को पौलुस की शिक्षा जीवन के ढंग के रूप में धन्यवादी बने रहने की थी। जो लोग दूसरों के साथ मिलकर रहते हैं उनके पास धन्यवादी होने का कारण है। जातीय पृष्ठभूमि के मतभेदों के बावजूद दूसरों से प्रेम के द्वारा बंधे होने और एक देह में ग्रहण होने के कारण कुलुस्सियों को धन्यवाद से भर जाना आवश्यक था। कुछ लोग ''धन्यवादी'' होने को ''एक देह में बुलाए'' जाने से अलग करते हैं परन्तु अन्य लोग इसे मिला देते हैं:

> इस शिक्षा का कि ''और धन्यवादी बने रहो'' ... (*kai eucharistoi ginesthe*) का अर्थ केवल इतना नहीं है कि लोग धन्यवाद की स्थिति में होकर परमेश्वर के सामने प्रार्थना में इसे बोलें, बल्कि समाज को स्तुति और महिमा में यह मानते हुए धन्यवाद देना चाहिए कि परमेश्वर ने उन्हें अंधकार की शक्ति से छुड़ाकर अपने प्रिय पुत्र के राज्य के क्षेत्र में बदल दिया (1:12)। एक ''देह'' अर्थात ''कलीसिया'' में धन्यवाद देना भजन की प्रस्तुति में निकलना चाहिए जिसमें मसीह को ''अदृश्य परमेश्वर के स्वरूप'' ... और हर वस्तु के प्रभु के रूप में महिमा दी जाए (1:15-20)।[3]

संसार के सब लोगों में से निश्चय ही मसीही लोगों के पास धन्यवादी होने के सबसे बड़े कारण हैं। मसीह के द्वारा हमें कई भौतिक आशिषें मिली हैं और मसीह ने हमें ''सब प्रकार की आत्मिक आशीष दी है'' (इफिसियों 1:3)। मसीही लोगों, परमेश्वर और मसीह के द्वारा हम से प्रेम किया जाता है। इसके अलावा हमें परमेश्वर के उपाय से पूर्ण सम्भाल मिलती है, वर्तमान और भविष्य की आशा से भरे हैं और इस वर्तमान जीवन और अपने भावी जीवन की वास्तविकताओं की समझ हमें दी गई है। मसीह में हम परमेश्वर के अनुग्रह के कारण धन्य हैं (इफिसियों 1:7; 2 तीमुथियुस 2:1)।

गाकर उसकी आराधना करना (3:16)

[16]मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो; और सिद्ध ज्ञान सहित एक-दूसरे को सिखाओ, और चिताओ, और अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाओ।

''मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो'' (3:16)

एक देह के लोगों ने पौलुस से कहा, ''मसीह की शांति तुम्हारे हृदय में राज करे,'' और मसीह के वचन को अपने हृदय में अधिकाई से बसने दो। नये नियम में ''मसीह का वचन,''

''वचन,'' ''परमेश्वर का वचन'' और ''प्रभु का वचन'' जैसे वाक्यांश आम तौर पर मिलते हैं।[4] यीशु ने कई बार ''मेरा वचन'' कहा,[5] परन्तु ''मसीह का वचन'' शब्द केवल यहां पर और रोमियों 10:17 में मिलता है (चाहे रोमियों 10:17 *logos* के बजाय यूनानी भाषा में ''वचन'' में *rhēma* है)।

यह ''मसीह का वचन'' मसीही व्यक्ति में अधिकाई से ''बसना'' (*enoikeō*) है। ''बसना'' का अर्थ ''स्वागत होना'' है। नये नियम में इस शब्द के और रूप मिलते हैं (रोमियों 8:11; 2 कुरिन्थियों 6:16; 2 तीमुथियुस 1:5, 14)। यहां पर इस के विशेष रूप का इस्तेमाल करके पौलुस यह विनती कर रहा था कि कुलुस्से के लोग मसीह के वचन में निरन्तर बने रहें और यह उनके जीवनों का स्थाई भाग बन जाए।

''बहुतायत'' (*plousiōs*) जिसका अनुवाद ''पूर्णता'' (1 तीमुथियुस 6:17; तीतुस 3:6; 2 पतरस 1:11) का अर्थ ''पूरी तरह से,'' ''पूर्णतया'' और ''सम्पूर्णता'' है। मसीह का वचन इन भाइयों में बहुतायत से बसना आवश्यक था, यानी उनके मनों में इसका स्वागत किया जाना आवश्यक था। सांसारिक बातों से इसे धकेलकर या उनके मनों में पसंदीदा जगह बनाने में रुकावट नहीं बननी चाहिए थी। पौलुस के कहने का अर्थ यह भी हो सकता है कि वचन अपनी बहुतायत में बसे, यानी केवल मात्रा में नहीं, बल्कि गुण में भी। यीशु की शिक्षा के बड़े मोतियों और सम्पत्ति को उनके जीवनों में होना और उनके गानों में सुनाया जाना आवश्यक था।

कुलुस्से के लोगों के पास सम्भवतया यीशु के लिखित वचन नहीं होंगे। उन्हें उन्हीं लोगों के ऊपर निर्भर रहना था, जिन्हें आत्मा के द्वारा उन पर यीशु के वचन प्रकट करने का निर्देश दिया गया था (इफिसियों 3:3–5)। उन्हें यीशु की शिक्षा को याद रखने का एक ढंग इसे संगीत की लय पर बांध देना था। लोग गाने की हज़ारों आयतों को याद रख सकते हैं जिन्हें लय की सहायता के बिना याद करना कठिन हो जाता है। गीत के बोलों पर ध्यान करते हुए, गाने या सुनने वालों के मनों पर मसीह के वचन का अधिक प्रभाव होना था, जिससे इसने बहुतायत से उन में वास करना था। पुराने नियम के बजाय कुलुस्सियों को यीशु की शिक्षा वाली बातों पर अधिक ध्यान देना था। प्रारम्भिक कलीसिया प्रेरितों की शिक्षा में बनी रही (प्रेरितों 2:42), उन बातों में जो यीशु द्वारा स्वयं बताई गई थीं या पवित्र आत्मा की सहायता के द्वारा दी गई थीं (यूहन्ना 14:26; 16:13)।

''और सिद्ध ज्ञान सहित एक-दूसरे को सिखाओ और चिताओ'' (3:16)

यदि मसीह का वचन उन में बसता और उनके गानों में लिप्त होता तो यह सिखाने और चिताने के लिए ज्ञान का स्रोत बन जाना था। ज्ञान (*sophia*) मसीही लोगों के लिए आवश्यक है। इस पत्र में पौलुस ने छह बार ''ज्ञान'' का उल्लेख किया (1:9, 28; 2:3, 23; 3:16; 4:5)। कुरिन्थियों के नाम अपने पत्र में उसने सच्चे ज्ञान को सांसारिक ज्ञान से अलग बताया (1 कुरिन्थियों 1:17—2:13)। कुलुस्से के लोगों को न केवल यह जानना कि वचन क्या कहता है, आवश्यक था बल्कि कलीसिया की बेहतरी के लिए इसे समझदारी से सम्भालना और इसका इस्तेमाल करना भी आवश्यक था।

झूठे शिक्षकों के ज्ञान के विपरीत, जो कुलुस्से के लोगों को परेशान कर रहे थे, यीशु की शिक्षा में पाया जाने वाला ज्ञान शुद्ध और सिद्ध है। इसमें मिर्च मसाला लगाने की आवश्यकता

नहीं है, क्योंकि उसके वचन सुनने वाले की आत्मिक आवश्यकताओं की पर्याप्त ढंग से पूर्ति कर देते हैं। परमेश्वर की सच्चाई को यीशु के कहे वचनों के द्वारा (यूहन्ना 12:49, 50) और लिखित वचन के द्वारा (1 कुरिन्थियों 14:37; 1 यूहन्ना 1:1-4) बताया गया था। मसीह की शिक्षा की परिपूर्णता केवल उसके वचन के द्वारा ही जानी जाती है।

''सिद्ध ज्ञान'' या तो ''तुम्हारे अन्दर'' हो सकता है या एक-दूसरे को सिखाओ और चिताओ। यदि बाद वाला हो जिसे अधिकतर अनुवादकों और टीकाकारों में प्राथमिकता दी जाती है तो कुलुस्सियों को एक-दूसरे को मसीह के ज्ञान से सिखाने और चिताने के लिए कहा गया था (2:3)।

''सिखाओ'' (*didaskontes*) का अर्थ निर्देश देकर सिखाना है। ''चिताओ'' (*nouthetountes*) गलत आचरण से सम्बन्धित अगुआई या परामर्श का संकेत देता है और इस प्रकार इसका अर्थ दूसरों को अपने आत्मिक जीवनों में उद्धार लाने के लिए चेतावनी देना है। मसीही लोगों के लिए गाने के द्वारा एक-दूसरे को समझाना और बनाना आवश्यक है। जिससे निर्देश के साथ-साथ प्रेरणा भी मिल सकती है।

गाना दो दिशाओं वाली गतिविधि है, जिसमें हमारे गानों के बोल दूसरों की ओर और परमेश्वर की ओर होते हैं। गाना दूसरों को सिखाने और चेताने के लिए होना चाहिए। इसलिए यह मसीही समुदाय के बीच साझा की जाने वाली गतिविधि है। यह व्यक्ति और परमेश्वर के बीच संवाद का माध्यम भी है। संतुलन के लिए दोनों का होना आवश्यक है। एक को दूसरे से अत्यधिक महत्व देने से डराने का उद्देश्य भ्रष्ट हो जाता है।

''एक-दूसरे'' सब के भले के लिए एक-दूसरे के साथ मसीह के वचन को साझा करने के मसीही लोगों के समुदाय के रूप में समझना आवश्यक है। पीटर टी. ओ. ब्रायन ने लिखा है,

> परन्तु यहां पर मण्डली के सदस्य हैं ... जो एक-दूसरे (*heautous*, ''अपने आप,'' जो वास्तव में *allēlous*, ''एक-दूसरे'' से अलग नहीं है, पारस्परिक अर्थ में निज वाचक होना है ...) को सिखाते और चिताते हैं।[6]

कइयों ने कहा है कि 3:16 और इफिसियों 5:19 में गाने की बात मसीही सभाओं में आराधना का संकेत नहीं, बल्कि व्यक्तिगत गाने या निजी सभाओं का संकेत है। एफ़. एफ़. ब्रूस ने ऐसे निष्कर्षों का खण्डन किया है:

> क्या ''तुम में'' का अर्थ ''तुम्हारे अन्दर'' (निजी मसीही लोगों के रूप में) या ''तुम्हारे बीच'' (मसीही समुदाय के रूप में) है? [शायद पौलुस ने] दोनों में से किसी विकल्प को अधिक दृढ़ता से निकालने की परवाह नहीं की होगी, बेशक चाहे दोनों में से एक को निकाल दिया गया हो, सामूहिक अर्थ के संदर्भ के दृष्टिकोण में प्राथमिकता दी जा सकती थी। मसीही संदेश सुनाने और उनकी सभाओं में मसीही शिक्षा देने का पर्याप्त अवसर होगा।[7]

इस आयत को कलीसिया द्वारा की जाने वाली गतिविधि पर लागू करके एडवर्ड लोउसे ने इस मूल्यांकन पर सहमति जताई। ''पर्याप्त धन्यवाद, जिसके लिए आयत 15 प्रोत्साहित करती

है, वचन के सुनने और प्रभाव पड़ने पर और परमेश्वर की महिमा के लिए समुदाय द्वारा गीत गाने में होता है।''[8]

प्रारम्भिक कलीसिया की सभाओं में गाना आराधना का आवश्यक भाग था। पलायनी छोटे (गयुस पलानियुस केसिलियुस सिकंदुस, जन्म लगभग 61 ईस्वी) ने मसीही लोगों से अपने विषय में लिखा। रोमी सम्राट ट्राजन के नाम अपने पत्रों में पलायनी ने बयान दिया कि वह मसीही लोगों को पाने पर उनके साथ कैसा व्यवहार करता था। इन पत्रों से मसीही सभाओं के भीतर की गतिविधियों से सम्बन्धित गैर मसीही स्रोत से बातें मिलती हैं। ईस्वी 110 के लगभग उसने लिखा कि ''दिन चढ़ने से पहले वे एक ठहराए हुए दिन इकट्ठा होते थे, जब वे मसीह के लिए भजन की वैकल्पिक आयतें गातें थे, जैसे ईश्वर के लिए।''[9] यह मसीही लेखों के बाहर जो आराधना के अपने कालों के दौरान मसीही लोग गाते थे, जैसे पौलुस ने इस आयत में आग्रह किया, मसीही लेखों के ऐतिहासिक प्रमाण हैं (3:16)।

''भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत'' (3:16)

भजन स्तुतिगान और आत्मिक गीत (इफिसियों 5:19 में भी उल्लेख है) आरम्भिक कलीसिया द्वारा गाए जाने वाले गीतों की किस्में हैं। टीकाकार आम तौर पर इस पर सहमत होते हैं कि इन तीनों में अंतर करना बहुत ही कठिन है। ये शब्द सम्भवतया गाने के विभिन्न रूपों का विवरण हैं। कइयों ने सुझाव दिया है कि ''भजन'' (*psalmoi*) का अर्थ वे गीत हैं जिनमें भजनों की पुराने नियम की पुस्तक की झलक मिलती है या वे भजन के यहूदी रूपों के अनुसार बनाए गए थे। ''स्तुतिगान'' (*humnoi*) मसीही संकलनकर्त्ताओं द्वारा बनाए गए स्तुति के गीत हैं। ''आत्मिक गीत'' आरम्भिक कलीसिया के समय के गीतों की शैली वाले गीत हैं। ''गीत'' (*odai*) धार्मिक ही हों ऐसा आवश्यक नहीं है, परन्तु पौलुस ने स्पष्ट किया कि किस प्रकार के गीत गाए जाने चाहिए। वे धार्मिक या ''आत्मिक'' गीत ही हों। ओ'ब्रायन ने निष्कर्ष निकाला है।

> अलग-अलग शब्दों के आधार पर चाहे शब्दों के बीच अंतर किया जा सकता है औ न ही नये नियम के भजनों का सही-सही वर्गीकरण किया जा सकता है ... ''भजन'' और ''स्तुतिगान'' और ''गीत'' ''गाने के पूरे दायरे को जिसकी प्रेरणा आत्मा देता है'' को वर्णित करता है। ... मसीह का वचन जब समुदाय के लोगों में बस कर उन्हें चलाता है तो वे आत्मा से भरे हुए गीतों, भजनों और गानों के द्वारा एक-दूसरे को सिखाते और चिताते हैं।[10]

''अपने-अपने मन में अनुग्रह के साथ परमेश्वर के लिए ... गाओ'' (3:16)

गाओ (*adontes*) आराधना करने वालों के मन (*kardiai*) में परमेश्वर के लिए ... अनुग्रह के साथ होना चाहिए [*charis*]। इससे थोड़ा मेल खाती आयत (इफिसियों 5:19) में पौलुस ने इफिसियों को लिखा, ''अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते (*adontes*) और कीर्तन करते (*psallontes*) रहो।'' कुछ लोग *psalmos* ''भजन'' की सजातीय क्रिया *psallō* के अर्थ पर झगड़ा करते हैं (इस पुस्तक में आगे देखें ''और अध्ययन के लिए: *Psallō*

का अर्थ'')।

अगली आयत में पौलुस ने कुलुस्सियों को निर्देश दिया कि जो कुछ भी वे करें उस सब में ''धन्यवाद'' दें, इस कारण जे. बी. लाइटफुट ने निष्कर्ष निकाला कि *charis* का अर्थ '''स्वीकार्यता', 'मधुरता,' ''[11] के रूप में समझा जाना चाहिए जो कि इसके मुख्य अर्थ से अधिक मेल खाता है।च्छड्ढ और ह्यच्छड्ढ में हिन्दी में इसका अनुवाद ''अनुग्रह'' हुआ है। परन्तु अन्य संस्करणों में ''धन्यवाद,'' ''धन्यवादी होना,'' या ''आभार'' हुआ है (RSV; NRSV; 1977 NASB; NASB; NIV; TNIV)। अनुवादक और टीकाकार आम तौर पर सहमत होते हैं कि यहां इसका अर्थ धन्यवाद या आभार है, चाहे अन्य आयतों में *charis* का अर्थ वही नहीं रहता है।

उसी मूल शब्द से *charis* का अनुवाद ह्वस्ख में 122 बार ''अनुग्रह'' 3 बार ''धन्यवाद'' 2 बार ''धन्यवादी होना'' और 6 बार ''धन्यवाद'' हुआ है। *Charis* का इस्तेमाल चाहे अधिकतर धन्यवाद के लिए नहीं हुआ है, पर कुछ पृष्ठभूमियों में यह अर्थ बेहतर मेल खाता है (रोमियों 6:17; 1 कुरिन्थियों 15:57; 2 कुरिन्थियों 2:14; 8:16; 9:15)। इसका मुख्य अर्थ सुन्दरता और आकर्षक आकर्षण है। जिसे मनोहरता, कृपालता, और मोहकता के रूप में वर्णित किया जा सकता है। सम्बन्धों के लिए इस्तेमाल होने पर अनुग्रह का अर्थ वह समर्थन देना है जिसके कोई योग्य न हो। कई बार इसका अर्थ आभार और विशेष समर्थन के लिए धन्यवाद देना है।

सब कुछ उसी के नाम में करना (3:17)

[17]वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो, और उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो।

''वचन में या काम में जो कुछ भी करो सब प्रभु यीशु के नाम से करो'' (3:17)

कुलुस्सियों के लिए जो कुछ पौलुस ने उन्हें बताया था, केवल वही करना आवश्यक नहीं था, बल्कि जो कुछ भी [वे करते] वचन में या काम में वह यीशु के नाम में किया जाना आवश्यक था। सब में केवल भले कामों का संकेत था न कि बुरे कामों का।

मसीहियत एक सक्रिय धर्म है। मसीही लोगों के लिए जानने के साथ-साथ काम करना (याकूब 4:17), विश्वास के साथ-साथ कार्य करना (याकूब 2:24), और कहने के साथ-साथ करना आवश्यक है (मत्ती 23:3)। सब लोगों का न्याय उनके कहे बोलों (मत्ती 12:37) और उनके कामों (सभोपदेशक 12:14; मत्ती 16:27; रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 1:17) से होगा न कि उससे जो वे जानते या मानते हैं। इस कारण जो कुछ भी हम कहते और करते हैं उसमें हमें बड़े सावधान रहने की आवश्यकता है।

आज्ञा मानने की बाहरी अभिव्यक्तियां हृदय से प्रेरित होनी आवश्यक हैं (रोमियों 6:17), जैसे कार्य करने के लिए व्यक्ति को प्रेरणा देने के लिए विश्वास आवश्यक है (इब्रानियों 11:4, 5, 7; याकूब 2:14-26)। क्रोध, करुणा, घृणा, प्रेम, दया, शोक, आनन्द, कामना, सद्गुण,

गलती, सच्चाई और किसी भी प्रकार काम चाहे भला हो या बुरा के काम के साथ-साथ व्यक्ति की भाषा उसके मन के भण्डार से निकलती है (मत्ती 12:34-36)। इसीलिए न्याय वचनों और कर्मों के आधार पर होता है।

''जो कुछ'' और ''सब'' शब्द उसी मूल शब्द से निकले हैं और वे यीशु के अधिकार के अनुसार सब कुछ करने के महत्व पर ज़ोर देते हैं। प्रभु यीशु के नाम से वाक्यांश का यही अर्थ है।

विलियम हैंड्रिक्सन का मूल्यांकन सही है:

> यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि नाम इस प्रकार से प्रभु यीशु का संकेत देता है जैसे स्वयं उसे दिखा रहा हो। ''इसलिए के नाम से'' का अर्थ ''उस से व्यापक सम्बन्ध में'' यानी उसकी प्रकट इच्छा से मेल खाते हुए, उसके अधिकार के अधीन, उसकी सामर्थ पर निर्भरता में है।[12]

कुलुस्सियों को सबकुछ ''प्रभु यीशु के नाम से'' [*en*] करना था। इसका अर्थ है कि जो कुछ भी वे करते वह यीशु के सम्मान में, उसकी अधीनता में और उसके लिए आदर के साथ किया जाना था, जो उसके नाम को दिखाता था। यीशु के नाम के प्रति यह व्यवहार, जो स्वयं यीशु के साथ था, हर काम के पीछे का प्रेरणाधायिक बल होना आवश्यक था। उन्हें सब कुछ उसकी इच्छा के अनुसार करना और कुछ भी उसकी उम्मीद के उलट नहीं करना था; इस प्रकार उन्हें उसके अधिकार के सम्मान के लिए सब कुछ उसी के नाम में करना था।

मसीही लोगों के काम मानवीय अधिकार पर आधारित नहीं होने चाहिए। यदि किसी धार्मिक शिक्षक के द्वारा कोई नई बात बताई जाती है तो इसे मानने वाले इसे केवल उस व्यक्ति के नाम पर आधारित मान सकते हैं, जिसने इसे आरम्भ किया। इस रीति को यीशु के नाम में नहीं किया जा सकता।

अधिकार में यीशु श्रेष्ठ है। उसे ''प्रभु'' और ''यीशु'' या ''मसीह'' कहा गया है। ''प्रभु'' शब्द अधिकार का संकेत देता है और इसका इस्तेमाल यीशु (1 कुरिन्थियों 8:6) के साथ-साथ पिता (मत्ती 4:7) के लिए हो सकता है। नये नियम में ''प्रभु'' का इस्तेमाल मुख्यतया यीशु के लिए किया गया है। ''यीशु'' वह नाम है जो इब्रानी में ''यहोशू'' है जिसका अर्थ है ''याहवेह बचाता है'' या ''याहवेह उद्धार है।'' इब्रानी भाषा के शब्द ''मसीहा'' से मेल खाते पद ''ख्रिस्त'' का अर्थ ''राजा, नबी या याजक के रूप में अभिषिक्त'' है।

यीशु के नाम के सम्बन्ध में, जो कुछ भी कहा गया है, वह उसी के लिए है। उसे अपने नाम से अलग नहीं किया जा सकता। उसका नाम हर नाम से ऊपर है (इफिसियों 1:21; फिलिप्पियों 2:9) और अन्य किसी से भी ऊपर है। हर घुटना उसके नाम के आगे झुकेगा (फिलिप्पियों 2:10) और उसके आगे घुटने टेकेगा। कुछ विनतियों से मेल खाने के लिए यीशु के नाम में विनतियां करते हुए (1 कुरिन्थियों 1:10; 2 थिस्सलुनीकियों 3:6; 2 तीमुथियुस 2:19), वह यीशु के सम्मान में बात कर रहा था। 3:17 में पौलुस ने कुलुस्सियों को अपने जीवन का ढंग ''प्रभु यीशु के नाम से'' अर्थात यीशु के अधिकार और प्रभु के रूप में उसकी शक्ति को मानने के अनुसार बिताने का आग्रह किया।

जो लोग यीशु के अनुयायी बन जाते हैं उन्हें ''मसीही'' कहा जाता है। मसीही लोगों के

रूप में हमें मसीह के लहू से खरीदा गया है (प्रकाशितवाक्यों 1:5)। हम उसके दासों के रूप में उसके हैं (1 कुरिन्थियों 7:22; इफिसियों 6:6) और हमें उसकी महिमा करना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 6:20)। हम उसकी महिमा करते हैं यदि हम सब कुछ उसके नाम से अर्थात उसकी इच्छा के अनुसार करते हैं, क्योंकि वह हमारा प्रभु है। मसीही बनने के समय हमने प्रभु के रूप में उसे मानते हुए (मत्ती 7:21; लूका 6:46; प्रेरितों 22:16) उसका नाम पुकारा था (प्रेरितों 2:21; रोमियों 10:13)। हम मसीह के हैं, इसलिए हमें निरन्तर उसकी सेवा करना और सब कुछ उसकी के नाम में अर्थात उसकी इच्छा के अनुसार करना आवश्यक है।

''उसके द्वारा परमेश्वर पिता का धन्यवाद करो'' (3:17)

इसके अलावा जो कुछ भी हम करते हैं, उसमें धन्यवाद करना आवश्यक है। अनुवादित शब्द ''धन्यवाद'' (*eucharisteō*) में (*charis*) ''अनुग्रह'' शब्द है जिसमें आभार और धन्यवादी होना हो सकते हैं (देखें 3:16)। 1:3, 12 तथा और कहीं पर पौलुस ने इसी शब्द के विभिन्न अन्य रूपों का इस्तेमाल किया (2:7; 3:15, 16, 17; 4:2)। *Eucharisteō* का इस्तेमाल परमेश्वर के सामने यीशु की प्रार्थना के सम्बन्ध में उसके द्वारा चार हज़ार लोगों को रोटियों और मछलियों से पेट भर खिलाने से पहले (मत्ती 15:36) और उसकी प्रार्थना के सम्बन्ध में किया गया, जब उसने प्रभु भोज की स्थापना की (मत्ती 26:27)। अन्य आयतों में इसका इस्तेमाल परमेश्वर के सामने की गई प्रार्थनाओं में (यूहन्ना 11:41; प्रेरितों 27:35) या आभार व्यक्त करने के लिए (1 कुरिन्थियों 1:14; 14:18) किया गया है।

3:15–17 में कुलुस्सियों को पौलुस द्वारा दी गई तीन निषेधाज्ञाओं से धन्यवाद के साथ जुड़े रहना आवश्यक था। उन्हें धन्यवाद के साथ एक देह में अपने मनों में मसीह की शांति को राज करने देना था (आयत 15); उन्हें मसीह के वचन को धन्यवाद के साथ अपने मनों में बसने देकर गाना था (आयत 16); और उन्हें धन्यवाद के साथ प्रभु यीशु के नाम में सब कुछ करना था (आयत 17)। कुलुस्सियों के पास हर समय और हर बात में धन्यवाद करने का कारण था। पौलुस ने इफिसियों को बताया था ''सदा सब बातों के लिए हमारे प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्वर पिता का धन्यवाद करते रहो'' (इफिसियों 5:20)।

उसके द्वारा कहने से पौलुस का अभिप्राय था कि वे अपनी प्रार्थनाओं, स्तुति, आराधना और धन्यवाद के साथ यीशु के द्वारा परमेश्वर पिता के पास जाएं। मसीही लोगों के लिए केवल एक और एकमात्र मध्यस्थ यीशु है (1 तीमुथियुस 2:5)। और कहीं पर पौलुस ने बताया कि पिता के पास यीशु के द्वारा हमारी पहुंच होती है (रोमियों 1:8; 7:25; 16:27; 2 कुरिन्थियों 1:20)।

और अध्ययन के लिए

***Psallō* का अर्थ**

इफिसियों 5:19 में पौलुस ने भाइयों से कहा ''आपस में भजन और स्तुतिगान और आत्मिक गीत गाया करो और अपने-अपने मन में प्रभु के सामने गाते [*adontes*] और कीर्तन करते [*psallontes*] रहो।''

Psallō का अर्थ सुर लगाना या गाना है। अति प्रतिष्ठित लैक्सिकन के कुछ संस्करणों में[13] चाहे इस शब्द की परिभाषा के साथ वाद्य यन्त्र यानी साज को जोड़ा गया हैं परन्तु यह गलत है। ऐसी परिभाषा इस तथ्य की उपेक्षा करती है कि पवित्र शास्त्र साहित्यिक यूनानी के बजाय कोयनी (''साधरण'') यूनानी भाषा में लिखा गया था। इफिसियों 5:19 में *psallō* के अर्थ के रूप में ''... सुर लगाना बेहतरीन समझ है।''[14] 1 कुरिन्थियों 14:15 और याकूब 5:13 में इस शब्द की बेहतरीन परिभाषा ''स्तुति गाना'' है।

मसीही आराधना का संगीत

आराधना में संगीत के सम्बन्ध में परमेश्वर क्या चाहता है?

(1) परमेश्वर चाहता है कि हम गाएं। नये नियम में हमें ''गाने'' या ''सुर लगाने'' (*psallō*; रोमियों 15:9; 1 कुरिन्थियों 14:15; याकूब 5:13; इफिसियों 5:19) का निर्देश है। कुछ लोग दावा करते हैं कि यूनानी संज्ञा शब्द *psalmos* के साथ सहयोग के रूप में साज़ का होना आवश्यक है। ए. टी. रॉबर्टसन ने लिखा है, '''साम' में मुख्य विचार संगीतमय साथ''[15] है परन्तु प्रमाण ऐसे निष्कर्ष का समर्थन नहीं करता। अन्य टीकाकार *psallō* के अर्थ में साज के साथ गाने के विचार को शामिल करते हैं। परन्तु प्रसिद्ध विद्वान इस निर्धारण से असहमत हैं।

द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टेस्टामैंट थियोलॉजी में ''भजन'' (*psalm*) शब्द की परिभाषा भजन या आत्मिक गीत का संकेत देने के रूप में होती है और इसमें परिभाषा में साज़ का साथ नहीं है: ''*Psalmos*, पवित्र गीत, भजन, *psallō*, गाना (भजन या स्तुति)।''[16] इसमें निम्न कथन भी हैं: ''अधिक सामान्य अर्थ में *psalmos* का अर्थ और *psallō* का अर्थ आत्मिक गीत गाना है।''[17]

नया नियम कई खण्डों वाला धर्म शास्त्रीय धर्मकोष साम को भजन या आत्मिक गीत से मिलाता है और इस कारण इस शब्द में साज का विचार शामिल नहीं है। यह कहता है, यू.: यहूदी मत की बात करें तो स्पष्टतया यह *humnos* [hymn] और *psalmos* [साम या भजन] या ode [गीत] के बीच कोई [सामान्य] अन्तर नहीं करता।[18]

इसके अलावा ओ'ब्रायन ने लिखा है:

> ... *Psallō* के मूल अर्थ के आधार पर ''[बाल] तोड़ना,'' तीर के तार को ''छेड़ना'' और फिर सारंगी या किसी अन्य तार वाले बाजे को ''छेड़ना।'' कुछ लोगों ने सोचा है कि *psalm* का अर्थ आवश्यक रूप में तार वाले बाजे के साथ गीत गाना था; परन्तु यह निषेध अनावश्यक है। ...[19]

मेरविन आर. विनसेंट ने *psallō* पर लेख के अधीन यूनानी शब्द *psalmos* (''भजन या सामज़'') के सम्बन्ध में टिप्पणी की है।

> संज्ञा शब्द *psalm* (इफिसियों 5:19; कुलुस्सियों 3:16; 1 कुरिन्थियों 14:26) जो कि व्याकरणीय अर्थ में इस क्रिया के जैसा है, का इस्तेमाल आम तौर पर नये नियम में धार्मिक गीत के लिए किया जाता है, जिसमें पुराने नियम के भजन का स्वभाव है; चाहे मत्ती

> 26:30; मरकुस 14:26 में, *humneō* जहां हमारे *hymn* का इस्तेमाल पुराने नियम का भजन गाने के लिए किया गया है। ... कइयों का मानना है कि यहां क्रिया शब्द का साज के साथ गाने का मूल महत्व है। सप्तति अनुवाद में इसका प्रमुख अर्थ है। ... न तो बेसिल न एम्ब्रोस और न क्रिसोस्टोम ने संगीत पर अपने गुणगान में साज वाले संगीत का उल्लेख किया और बेसिल ने तो स्पष्ट रूप में इसे गलत ठहराया। बिंगम ने संक्षेम में इस बात का खण्डन किया और जस्टिन मार्टिर को स्पष्ट कहते हुए दिखाया कि मसीही कलीसिया में साज वाले संगीत का इस्तेमाल नहीं किया जाता था। यहां पर इस क्रिया का इस्तेमाल स्तुति गाने के अर्थ में हुआ है।[20]

इसका अर्थ यह हुआ कि विनसेंट के अनुसार प्रारम्भिक कलीसिया साजों की सहायता के बिना गाती थी। उसके विचार में भजन गाना साज के साथ गाने का संकेत नहीं था।

पुराने नियम की आराधना में चाहे संगीत के विभिन्न साजों का इस्तेमाल किया जाता था। परन्तु कलीसिया के आरम्भ से ही मसीही लोग कैपिला अर्थात बिना साजों की सहायता के गाते थे।

> यह सोलहवीं शताब्दी तक और उसके सहित की बात है जब संगीत बिना साज वाली आवाज़ों के लिए लिखा जाता था। ... इस कारण आज आम तौर पर गायक दल के संगीत का इस्तेमाल ''बिना साज के'' के पर्याय के रूप में किया जाता है।[21]

मसीही लोग अपनी आराधना में कम से कम आरम्भिक छह सौ वर्षों तक केवल गाया करते थे, जिसके बाद रोमन कैथोलिक चर्च अपने लोमासो में गाने के साथ साजों को लाने लगा। इस्ट्रन ऑर्थोडोक्स चर्च (रूसी, यूनानी, यूक्रेनी) हाल के वर्षों तक साजों का इस्तेमाल करने से बचते रहे। प्रोटेस्टेंट लहर की कई कलीसियाएं, जिन्हें मार्टिन लूथर ने गति दी, अपने अस्तित्व के आरम्भिक दो सौ वर्षों तक कैपिला ही गाते थे। प्रोटेस्टेंट कलीसियाओं में गाने के साजों को बिना विरोध के नहीं लाया गया, विशेषकर प्रेसबिटेरियन चर्च में।[22] 19वीं शताब्दी के दूसरे भाग में साजों को शामिल किए जाने से बहुत सी मण्डलियां बहाली की लहर में बंट गईं।

वाल्टर बाउर ने परिचय लिखा है जो ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन के 1979 और 2000 दोनों संस्करणों में मिलता है। इसमें समझ आता है कि LXX की यूनानी भाषा नये नियम की यूनानी से अलग है:

> प्राचीनतम मसीही इतिहास, जिसकी यह पुस्तक बात करती है, जो कई लेखों से बनी है जिन्हें यूनानी भाषा में लिखा गया था। यह अधिक प्राचीन समयों वाली यूनानी नहीं है, अथेनियों के कम से कम सुनहरी युग की तो नहीं[23] जिसे अब उच्च शिक्षण संस्थानों में पढ़ाया जाता है और उन में इस्तेमाल होने वाले शब्दकोषों में उसे अति प्रमुख स्थान दिया जाता है। इसके विपरीत तुलना करने पर पता चलता है कि स्वरविज्ञान और शब्द संरचना संरास्त्र में, वाक्य विज्ञान और शैली में अन्तर हैं, न कि उन में से छोटे से छोटे, शब्द भण्डार में।[24]

> नये बने शब्दों के रूप से भी महत्वपूर्ण यह तथ्य है कि हमारा साहित्य कई बार LXX

> का अनुकरण करता है, कई बार इससे अलग होता है, कई पुराने शब्दों का जिनमें नये अर्थों वाले सामान्य यूनानी शब्द भी होते हैं, इस्तेमाल करता है। ...[25]

इसका अर्थ यह हुआ कि आवश्यक नहीं कि नये नियम के शब्दों का अर्थ LXX के शब्दों के अर्थ वाला ही हो। इस कारण LXX में *psallō* का अर्थ जो केवल ''गाना'' या ''साज के साथ गाना'' होगा, *psallō* के कोयनी (''साधारण'') अर्थ को दर्शा सकता है और नहीं भी।

कुछ लोगों ने *psalmos* का अर्थ नये नियम के समयों में साज के साथ गाने के लिए था, थेयर की पुरानी ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट को उद्धृत किया है, थेयर ने लिखा है,

> *Psallos* का प्रमुख विचार चाहे संगीतमय सार है और *humnos* परमेश्वर की स्तुति का, *ōdē* गाने के लिए सामान्य शब्द है। स्तुति के लिए हो या किसी अन्य विषय के लिए साज के बिना या साज के साथ हो सकता है। इसी कारण उसी गीत के लिए एक ही समय में *psalmos humnos ōdē* और *ode* होना बिल्कुल सम्भव था। ...[26]

थेयर के लैक्सिकन के परिचय में यह बताया गया है कि दिए गए पर्यायवाची शब्द लैक्सिकन के मुख्य भाग की परिभाषाओं में दिए गए अर्थों को नहीं बदलते हैं:

> पुनः समानार्थ शब्दों की चर्चा में साहित्यिक उपयोग में ने वाले हवाले का बार-बार आना (जैसा कि शमिट ने अपनी विशाल पुस्तक में किया है) को कई लेखों में दी गई परिभाषाओं में सुधार लाने के लिए बनाए गए मानना आवश्यक नहीं है। इसके विपरीत साहित्यिक उपयोग आमतौर पर केवल तुलना के मानक के रूप में होता है, जिससे किसी शब्द की दिशा और दर्जे के अर्थ में बदलाव को नापा जा सके।[27]

Psallō की परिभाषा देते लेख में *psallō* के व्याकरणीय विकास के बारे में बताने के बाद कहा कि नये नियम में इसका अर्थ ''भजन गाना, गाकर परमेश्वर की स्तुति को मनाना है।''[28] *Psalmos* से सम्बन्धित परिभाषा में भी यही ढंग इस्तेमाल किया गया है। व्याकरण के बाद नये नियम की परिभाषा दी गई है: ''इस प्रकार धार्मिक गीत, भजन।''[29]

पुरातत्वीय अध्ययनों के कारण 19वीं सदी के अन्त तक विद्वानों को नये नियम की कोयनि यूनानी बेहतर समझ आने लगी। इस समय से पहले कुछ विद्वान जिन्हें यह अहसास था कि नये नियम की यूनानी पुरानी साहित्यिक यूनानी से अलग थी उन्हें लगता था कि यह इब्रानी भाषा के प्रभाव के कारण था। अन्यों को लगता था कि यह अपने आप में एक विशेष भाषा, यूनानी का विशुद्ध और विलक्षण रूप था जिसकी प्रेरणा पवित्र आत्मा की ओर से दी गई थी। प्रतिदिन के दस्तावेज़ों की खोज से विद्वानों को यह समझ आने लगा कि नये नियम में साधारण लोगों की यूनानी भाषा का इस्तेमाल किया गया था। इन दस्तावेज़ों ने शब्दकोष संकलनकर्त्तों को कोयनि या ''साधारण'' की ओर सही ढंग से परिभाषा देने, उपयोग और नये नियम के शब्दों की अनुपयुक्त परिभाषाएं लागू करने से बचने में सहायता की।

(2) परमेश्वर चाहता है कि हम उसके अधिकार से गाएं। परमेश्वर के सारे प्रकाशन की

तरह गाने के प्रति हमारे लिए उसकी पसन्द सीमित है। जहां पर उसने पाबंदियां लगाई हैं वहां आराधक अपने विवेक के अनुसार कर सकते हैं। इस नियम का बड़ा उदाहरण जहाज का बनाना है (उत्पत्ति 6:14-16)। नूह को अपनी पसन्द के औज़ार इस्तेमाल करने की छूट थी, परन्तु उनके इस्तेमाल के लिए परमेश्वर द्वारा बताई गई सामग्री तक सीमित थी। अतिरिक्त खिड़की या दरवाज़ा लगाने से परमेश्वर की इच्छा का उल्लंघन हो जाना था।

यही नियम परमेश्वर की आराधना में लागू होगा। यीशु ने अखमीरी रोटी और दाख के रस को चुना। रोटी और दाख का रस ही वह भोजन है, जिसे प्रभु की मेज़ में दिया जाना चाहिए। बर्तन दाख का रस देने के लिए आवश्यक है। परमेश्वर ने यह नहीं बताया कि बर्तन किस चीज़ का बना हो इसलिए मसीही लोग किसी भी प्रकार का बर्तन चुन सकते हैं, चाहे वह शीशे का हो, प्लास्टिक का, कागज़ का, धातु का या मिट्टी का कोई बर्तन।

यदि परमेश्वर कोई पसन्द देता है तो यह विशेष होती है। इसमें जोड़ना, निकालना या इसके स्थान पर कुछ और लगाना उसकी इच्छा का उल्लंघन है। परमेश्वर द्वारा अपनी पसन्द बता देने पर उसे पाबन्दियों को विस्तार से समझाने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ऐसा करने का अर्थ होगा कि हर प्रकार से भटकना। यदि परमेश्वर ने कोई पाबन्दी नहीं लगाई तो उसके चेलों को जो वे चाहे आराधना में करने की छूट है। परमेश्वर ने अपनी पसन्द बता दी है कि हमें आराधना में क्या करना है, इसलिए उसकी पसन्द में कुछ भी जोड़ा नहीं जाना चाहिए। यही बात गाने, प्रार्थना करने, चंदा देने या किसी भी अन्य गतिविधि पर लागू होती है। जब परमेश्वर ने कोई निर्देश दे दिया हो तो उसमें जोड़ना या उसमें से निकालना उसकी इच्छा का उल्लंघन है।

ड्राइवर को निर्देश देते हुए एक यात्री किसी नगर का विशेष पता बताता है; वह अन्य सभी सम्भावनाओं को नकारने का प्रयास नहीं करता। निर्देशों में आम तौर पर बताया गया होता है कि किन-किन सड़कों पर से जाना है; किन सड़कों से नहीं जाना है, उनका उल्लेख नहीं होता। इस तथ्य का कि किसी सड़क का उल्लेख नहीं है, का अर्थ यह नहीं है कि यह रास्ता मंज़िल को नहीं जाता है। परमेश्वर ने अपनी शिक्षा में यही किया है। हमें यह बताकर कि क्या करना है उसने अन्य हर चीज़ को निकाल दिया है; उसके लिए हमें हर वह बात बताने की आवश्यकता नहीं थी कि हमें क्या नहीं करना चाहिए।

(3) परमेश्वर चाहता है कि हम सही व्यवहार के साथ जाएं। मसीही लोगों को सावधान रहना चाहिए कि जो कुछ परमेश्वर ने बताया है कि आराधना में केवल उसी का इस्तेमाल करें। जो लोग उससे अधिक या कम करते हैं वे परमेश्वर की पसन्द का उल्लंघन करते हैं। परन्तु ढंग सही होने का अर्थ आवश्यक नहीं कि सार में आराधना सही है। शब्दों को गाना काफ़ी नहीं है, हमें आत्मा में शामिल होना आवश्यक है। सारी आराधना आत्मा और सच्चाई से होनी आवश्यक है (यूहन्ना 4:23, 24)। परमेश्वर उन लोगों की आराधना को स्वीकार करता है जो उस माध्यम के द्वारा जिसे उसने चुना है, उसके पास आकर अपने मनों को उसके सामने उण्डेल देते हैं। ''आत्मा से'' और ''अपने-अपने मन में परमेश्वर के सामने'' एक ही विचार को दिखाता है। मौखिक वार्तालापों में मन का शामिल होना आवश्यक है; यह वह साज है जिसे गाने के साथ बजना आवश्यक है।

आराधना तब होती है जब स्तुति और प्रशंसा से भरे होंठ (इब्रानियों 13:15), धन्यवादी

मनों के साथ प्रशंसा और धन्यवाद में परमेश्वर तक जाते हैं। मसीही आराधना में उन भजनों का होना आवश्यक है जिन में प्रभु की स्तुति और धन्यवाद के शब्दों के साथ-साथ वे गीत हों, जो सिखाते और चिताते हों।

प्रासंगिकता

धन्यवादी जीवन जीना (3:15-17)

जो कुछ परमेश्वर ने हमारे लिए किया है, उस सब को ध्यान में रखते हुए हमें धन्यवादी होने के ढेरों कारण मिल जाएंगे (आयतें 15, 17)। मसीह की प्रिय देह का सदस्य होना आनन्द करे या धन्यवादी होने का कारण होना चाहिए। जीवन की नकारात्मक बातों पर ध्याान देते रहने से हमारे अन्दर परमेश्वर के प्रति आभार व्यक्त करने की भावना नहीं आ सकती। हमें दूसरों की जीवनशैली को देख कर यह नहीं सोचना चाहिए कि जीवन में हमें ये चीज़ें नहीं मिली हैं (भजन 37:7-10; 73:2, 3, 16-20)। धन्यवादी मन इस अहसाय से आता है कि जीवन में आने वाली कठिनाइयां हमारे चरित्र को बनाती हैं (रोमियों 5:3, 4; इब्रानियों 12:4-11; याकूब 1:2-4)। यह जानते हुए कि आत्मिक उन्नति के लिए दोनों ही आवश्यक हैं, हमें धूप और बारिश दोनों के लिए ही धन्यवादी होना चाहिए।

मसीही लोगों के लिए दूसरों को समझाना और धन्यवाद व्यक्त करना आवश्यक है (आयत 16)। किसी अन्य धर्म के पास गाने के लिए इतने गीत नही हैं, जितने मसीहियत के पास हैं, क्योंकि मसीही लोगों के पास गाने को बहुत कुछ है। हम लगभग किसी भी समय और कहीं भी गा सकते हैं। महिमा गाने के समय हमें यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि हम केवल संगीत का आनन्द लेने के लिए ही नहीं बल्कि परमेश्वर के साथ बात करने और साथी मसीही लोगों को समझाने के लिए गा रहे हैं।

मसीही लोगों के लिए सब कुछ यीशु मसीह की इच्छानुसार करना आवश्यक है (आयत 17)। हमें यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जो कुछ भी हम करते हैं उससे उस का नाम जुड़ा हो। हम कुछ भी ऐसा न करें जो यीशु की शिक्षा के विपरीत हो। इसके बजाय जो भी हम करें वह उसकी शिक्षा के आधार पर ही बना हो (मत्ती 7:24-27; 28:20)।

''मसीह की शांति'' (3:15)

''मसीह की शांति'' तिहरी शांति है, जिसमें परमेश्वर के साथ मेल, भीतरी शांति और दूसरों के साथ मेल शामिल है। ये तीनों आपस में एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं। इनमें से सब से महत्वपूर्ण परमेवश्र के साथ मेल है, जिससे भीतरी शांति मिल सकती है और जिससे आगे दूसरों के साथ मेल सम्भव हो सकता है।

परमेश्वर के साथ मेल यीशु के काम के कारण होता है। ''सो जब हम विश्वास से धर्मी ठहरें, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें'' (रोमियों 5:1; देखें यशायाह 9:6)।

हमारे बुरे काम हमें परमेश्वर से अलग कर सकते हैं जिससे दूसरों के साथ हमारी शत्रुता

हो सकती है (कुलुस्सियों 1:21)। क्रूस पर बहे अपने लहू के द्वारा यीशु ने हमारे पाप का कर्ज़ चुका कर हमारे लिए परमेश्वर के साथ मेल को सम्भव बना दिया (1:20-22)।

परमेश्वर के साथ हमारे मेल के तथ्य के बावजूद इसका अर्थ यह नहीं है कि हर तरह के लोगों के साथ भी मेल है। अपने समय के झूठे नबियों के विषय में यिर्मयाह ने लिखा था, "वे 'शान्ति है, शान्ति,' व ऐसा कह कहकर मेरी प्रजा के घाव को ऊपर ही ऊपर चंगा करते हैं, परन्तु शान्ति कुछ भी नहीं" (यिर्मयाह 6:14; देखें यहेजकेल 13:10)। हमारी परमेश्वर के साथ सुलह तभी है यदि हमें अपने पापों से छुड़ाया गया है और यदि हमारा जीवन उसे प्रसन्न करने वाला है।

भीतरी शांति अतीत के प्रति संतुष्ट भावना, वर्तमान की शांत भावना, और भविष्य में झांकते हुए मन की आशा है। अतीत के साये की तरह हमारे पीछे रह सकता है। "दुष्टों के लिए कुछ शांति नहीं" (यशायाह 48:22); "दुष्ट लोग जब कोई पीछा नहीं करता तब भी भागते हैं" (नीतिवचन 28:1)।। यदि हम परमेश्वर की सेवा करने की तलाश में हैं और यीशु के लहू के द्वारा धोए गए हैं (1 यूहन्ना 1:7), तो यकीन से कह सकते हैं कि हमारे अतीत को भुला दिया गया है (इब्रानियों 8:12)। बुराई हमारा अतीत था और यदि यीशु ने हमें हमारे पापों से छुड़ा लिया है तो हमारे अतीत को हमारा पीछा नहीं करना चाहिए।

अतीत के अपराधों से छुड़ाए जाने का अर्थ आवश्यक नहीं कि यह हो कि वर्तमान में हमारी उत्पन्न की गई कोई भी समस्या जो हमारे भविष्य को प्रभावित कर सकती है, खत्म हो जाएगी। यदि हमारे अतीत ने हमारे वर्तमान और भविष्य में उलझन पैदा की है तो हम यकीन से कह सकते हैं कि जब हम परमेश्वर की इच्छा को पूरा करने के इच्छुक होंगे तो परमेश्वर हमें न छोड़ेगा न त्यागेगा (इब्रानियों 13:5)।

भीतरी शांति हमें केवल वर्तमान में मिल सकती है। दाऊद ने यह लिखते हुए कि "मैं शांति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि, हे यहोवा, केवल तू ही मुझ को एकान्त में निश्चिन्त रहने देता है" (भजन संहिता 4:8)। भीतर से शांति वाले व्यक्ति की शांति का वर्णन किया।

> शांति पाया हुआ व्यक्ति रात को चैन से रह सकता है और रात को आराम से सो सकता है। छुटकारा पाए हुए मन की शांति की कल्पना करो जिसे अपने आप में मालूम है कि वह परमेश्वर की भुजाओं में सुरक्षित है; जो इस संसार में, अपने चेहरे के प्रकाश में और अपने ग्रहण किए जाने के उल्लास में आनन्द मनाता है, जो सुख की नदियों के पास रहता और स्वर्गीय प्रेम की हरी चराइयों में लेटा है। एक छोटे टापू में, कोप की गर्जन ऐसे लगती है, जैसे दूर समुद्री चट्टान पर कुछ लहरा रहा है।[30]

उद्धार पाए हुए मन की शांति की कल्पना करें जिसे मालूम है कि वह परमेश्वर की भुजाओं में सुरक्षित है; इस संसार में भी, अपने चेहरे के प्रकाश और उसके आलिंगन के उल्लास में आनन्द करता है; हमें भविष्य के सम्बन्ध में चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि यीशु हमें आश्वस्त करता है कि परमेश्वर उनकी देखभाल करेगा, जो परमेश्वर के राज्य को प्राथमिकता देते हैं (मत्ती 6:28-33)। भविष्य की चिंता के कारण परेशान दिल की दवा परमेश्वर में विश्वास और भरोसा है। परमेश्वर उन्हें जो उस में भरोसा रखते हैं, पूर्ण शांति में रखेगा (यशायाह 26:3)। भजन संहिता 23 अध्याय परमेश्वर में ऐसे भरोसे और विश्वास को दिखाता है: "यहोवा मेरा

चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी। चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे साथ रहता है; तेरे सोटे और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है'' (भजन संहिता 23:1, 4)।

यीशु ने हमें अपने पास आने का निमन्त्रण देकर, उसका जुआ उठाने और उससे सीखने के द्वारा शांति पाने की दवाई दी है। इससे हमें अपने मनों में शांति मिलेगी (मत्ती 11:28-30)। उसने हमें अपनी शांति दे दी है (यूहन्ना 16:33)। यदि हम अपने मनों को आत्मा की बातों पर लगाएं तो शांति हमें मिल जाएगी (रोमियों 8:6; गलातियों 5:22, 23), जिसका अर्थ सही बातों पर विचार करना, पौलुस के जीवन और शिक्षा का अनुकरण करना (फिलिप्पियों 4:8, 9) और प्रार्थना में अपने भोज परमेश्वर को दे देना है (1 पतरस 5:7)।

दूसरों के साथ शांति या मेल ऐसी बात है, जो यीशु हम से चाहता है (मरकुस 9:50)। कुछ लोग हमें अपने साथ मेल रखने नहीं देंगे। ऐसा होने पर हमें मेल या शांति रखने के हमारे प्रयासों को नकारने वालों (मत्ती 5:44), दूसरों से सलाह लेने (नीतिवचन 15:22), और दूसरों के साथ शांति से रहने के हमारे भरसक प्रयास को नकारने वालों के लिए प्रार्थना करनी चाहिए (रोमियों 12:18; 14:19)।

हमारा एक भजन जो इतनी खूबसूरती के साथ उस भरोसे और शांति को दिखाता है जो मसीह में हमें मिली है वह ''पीस, पर्फेकट पीस'' का गीत है:[31] यह शांति के स्रोतों का सुझाव देता है: पाप के इस अंधकार भरे संसार में यीशु का लहू; खसाखस कर्त्तव्यों के बजाय यीशु की इच्छा को पूरा करने से विश्राम उमड़ते दुखों के बीच यीशु की गोद में आराम; और यीशु पर भरोसे के साथ जो सिंहासन पर है अज्ञान यीशु।

किसी ने खूब कहा है, ''मुझे यह मालूम नहीं है कि भविष्य के गर्भ में क्या है, परन्तु मैं उसे जानता हूं जिसके पास भविष्य है।''

हमारे गीतों में मसीह के वचन (3:16)

प्रारम्भिक मसीही गीतों में मुख्यतया मसीह की शिक्षाओं में पाए जाने वाले शब्द होते होंगे और गीतों में जिनमें उसके प्रति भक्ति दिखाई दी है। आरम्भिक मसीही भजनों में इस्तेमाल होने वाले शब्दों का किसी को भी पक्का पता नहीं है। परन्तु पौलुस के कुछ पत्रों से यह संकेत मिल सकता है कि वे गीत कैसे होते थे। बहुत से विद्वानों का मानना है कि उसने अपने पत्रों में इनमें से कुछ गीतों को सम्मिलित किया (देखें इफिसियों 5:14; 2 तीमुथियुस 2:11-13)। 1 तीमुथियुस 3:16 में उसने लिखा,

> वह जो शरीर में प्रकट हुआ,
> आत्मा में धर्मी ठहरा,
> स्वर्गदूतों को दिखाई दिया,
> अन्यजातियों में उसका प्रचार हुआ,
> जगत में उस पर विश्वास किया गया,
> और महिमा में ऊपर उठाया गया।

मसीह के वचन बहुतायत से हम में बसने आवश्यक हैं। किसी गीत के बोल उसके सुर से अधिक महत्वपूर्ण हैं। पौलुस ने सुर के सम्बन्ध में नहीं, बल्कि गीतों के सम्बन्ध में निर्देश दिए हैं। हमारे गीतों, भजनों और आत्मिक गीतों में वे विषय होने आवश्यक हैं जो यीशु और उसकी शिक्षा से जुड़े हों। सदियों से बहुत से हमारे गीत जो संकलित होते हैं, इसी को ध्यान में रखकर लिखे जाते हैं।

परमेश्वर को दिल से गाए गए गीत भाते हैं। यह सही है क्योंकि परमेश्वर दिल को देखता है। यदि हम अपने मनों को बाहर की बातों पर लगाकर गाएं तो हमने अपने गाने के दौरान मसीह के वचनों को अपने अन्दर बसने नहीं दिया है। ऐसा गाना व्यर्थ, खोखला और अस्वीकार्य है। यशायाह ने इस्राएलियों के सम्बन्ध में परमेश्वर की शिकायत को लिखा है (देखें मत्ती 15:8): ''ये लोग जो मुंह से मेरा आदर करते हुए समीप आते, परन्तु अपना मन मुझ से दूर रखते हैं'' (यशायाह 29:13)। परमेश्वर आराधना में होठों के बलिदान को चाहता है; परन्तु इससे भी बढ़कर वह चाहता है कि हमारे गीतों के सुर हमारे दिलों से निकलें (इफिसियों 5:19)।

मसीह के वचनों में बुद्धि और ज्ञान पाई जाती है। सारी बुद्धि और ज्ञान का देने वाला यीशु है (कुलुस्सियों 2:3); इस कारण यह आवश्यक है कि हम अपने गीतों के आधार के रूप में उसकी शिक्षा का इस्तेमाल करें। यदि हम उसके संदेश को सही ढंग से आगे देने का सचेत प्रयास करें तो उसकी शिक्षा को कविता के रूप में भी दिया जा सकता है।

मसीह के वचनों से शिक्षा और एक-दूसरे को चिताने को बढ़ावा मिलता है। हमारे गाने का एक उद्देश्य दूसरों को यीशु की शिक्षा से समझाना होना चाहिए। यदि हम ''एक-दूसरे'' को सिखाना और चिताना चाहते हैं तो पौलुस का निर्देश सामूहिक आराधना में गाने को आवश्यक बना देता है। हमें केवल मसीही लोगों के इकट्ठ में गाने तक सीमित नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि हम अकेले होने पर भी गा सकते हैं (याकूब 5:13)।

संगीत के पूर्ण कार्यक्रम में शिक्षा, देने, चिताने, स्तुति करने और समर्पण के गीत होंगे। गाते हुए हमें यह ध्यान में रखना आवश्यक है कि वहां पर केवल मण्डली के लोग ही नहीं हैं, परमेश्वर भी वहां है।

मसीह के वचनों में परमेश्वर का धन्यवाद शामिल होता है। हमें यह कभी नहीं भूलना चाहिए कि हर अच्छी चीज़ परमेश्वर की ओर से मिलती है (याकूब 1:17)। इस बात के अहसास से हमारे मनों को धन्यवाद से भर जाना चाहिए और हमारे गानों में इसे दिखाई देना चाहिए। सबसे बढ़िया सुर जो हमारे दिल गा सकते हैं वे परमेश्वर की भलाई के लिए उसकी स्तुति में मिलते हैं। भजनों में यह विचार आम तौर पर व्यक्त किया जाता है।[32]

हमें अपने जीवनों में मिलने वाली बहुत सी आशिषों के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए। कई बार हमारी सबसे बड़ी आशिषें ऐसी होती हैं जिनसे हमें संघर्ष करना आवश्यक है। सफल होने के बाद हमें मज़बूत मसीही लोगों में बढ़ने के लिए प्रेरणा मिल सकती है (रोमियों 5:3, 4; इब्रानियों 13:4-11; याकूब 2:2-4)।

जब हमारे मन उन अच्छी बातों के लिए, जो परमेश्वर ने हमारे लिए की हैं, आभार से भरे होते हैं तो हम सचमुच में परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं। यह तभी हो सकता है यदि हम इस बात का अहसास करें कि जो आशिषें हमारे पास हैं, वे केवल हमारे काम करने के कारण नहीं मिलीं

बल्कि हमें अच्छे दान देने में परमेश्वर सक्रिय है (याकूब 1:17)। जब हमें यह अहसास हो जाता है कि ऐसा ही है तो हम धन्यवाद के साथ उमड़ते अपने दिलों से गा सकते हैं।

हमारे वचन और काम (3:17)

जब हम यीशु के नाम में कुछ करते हैं तो हम वह इसलिए कर रहे होते हैं कि या तो हम उसके अधिकार से कर रहे हैं या फिर हम उसे आदर और महिमा देने के लिए कर रहे हैं। यीशु ने कहा, ''उसी प्रकार तुम्हारा उजियाला मनुष्यों के सामने चमके कि वे तुम्हारे भले कामों को देखकर तुम्हारे पिता की, जो स्वर्ग में है, बड़ाई करें'' (मत्ती 5:16)। वचन में या काम में हम जो कुछ भी करें वह सब उसी के नाम में किया जाना आवश्यक है।

हम वचन में क्या करते हैं। बाइबल में कई आयतें हैं जो हमारे वचनों और हमारी जुबान के इस्तेमाल पर चर्चा करती हैं। इसके सम्बन्ध में बाइबल की किसी भी अन्य पुस्तक से अधिक जानकारी में नीतिवचन की पुस्तक हो सकती है। याकूब ने अपने पत्र में अच्छा परामर्श दिया है, उसने लिखा कि हमें सुनने के लिए तत्पर, बोलने में धीर और क्रोध करने में धीमे होना आवश्यक है (याकूब 1:19)। उसने कहा कि कोई भी अपनी जीभ को लगाम नहीं लगा सकता (याकूब 3:1-9)।

हर शब्द का इस्तेमाल परमेश्वर को महिमा देने के लिए किया जाना चाहिए। हमें वैसे बोलना चाहिए जैसे यीशु चाहता है कि हम बोले, ताकि उसके नाम को आदर मिले।

हम काम में क्या करते हैं। हमारा हर काम उसी से संचालित होना चाहिए, जो हमें लगता है कि यीशु हम से करवाना चाहता है। जो कुछ हम करते हैं, वह इन कारणों से महत्वपूर्ण है:

1. हम उस आदमी के जैसे बन जाएंगे जिसने अपना घर चट्टान के ऊपर बनाया (मत्ती 7:24, 25)।
2. हम परमेश्वर की इच्छा को पूरी करके यीशु के भाई बन जाएंगे (मत्ती 12:50)।
3. हमारा न्याय हमारे कामों के द्वारा होगा (मत्ती 16:27; रोमियों 2:6; 2 कुरिन्थियों 5:10; 1 पतरस 1:17)।
4. यदि हम परमेश्वर के वचन को मानें तो हमें आशीष मिल सकती है (लूका 11:27, 28; याकूब 1:25)।
5. हमारा उद्धार हमारे कामों से प्रभावित होता है (फिलिप्पियों 2:12)।
6. हमारे कामों से दूसरों को आशीष मिल सकती है (याकूब 2:15-17)।
7. हम कामों से ''धर्मी'' ठहराए जाते हैं न कि केवल विश्वास से (याकूब 2:24)।

जो कुछ भी हम करते हैं वह यीशु के नाम में होना आवश्यक है। उसके नाम में हमें इकट्ठे होना (मत्ती 18:20; 1 कुरिन्थियों 5:4), मन फिराव (लूका 24:47), विश्वास (यूहन्ना 1:12; 1 यूहन्ना 5:13) का प्रचार करना, प्रार्थना करना (यूहन्ना 14:14), बपतिस्मा लेना (प्रेरितों 2:38), बोलना (प्रेरितों 9:27; याकूब 5:10), धर्मी ठहराए जाना (1 कुरिन्थियों 6:11), और धन्यवाद देना (इफिसियों 5:20) आवश्यक है।

हमें ''मसीही'' नाम मिला है और इसी नाम से हम जाने जाते हैं (1 पतरस 4:14-16)। हमारी चिंता इस प्रकार से जीवन जीने की होनी चाहिए, जिससे मसीह के नाम को महिमा मिले और उसके नाम के साथ किसी प्रकार का कलंक न हो।

टिप्पणियां

[1]वाल्टर बाउर, ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर, 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक विलियम डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस 2000), 183. [2]जे. डी. डग्लस, संपा., ग्रीक-इंग्लिश इंटरलीनियर न्यू टैस्टामैंट्र, अनु. रॉबर्ट के. ब्राउन एंड फिलिप डब्ल्यू. कम्फर्ट (व्हीटन, इलिनोय: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1990), 704. [3]एडुअर्ड लोहसे, कोलोसियंस एंड फिलेमोन, अनु. विलियम आर. पोहलमन एंड रॉबर्ट जे. कैरिसख्छरमेनिया (फिलाडेल्फिया: फोर्टीस प्रैस 1971), 150. [4]उदाहरण के लिए, देखें मत्ती 13:20; 15:6; लूका 22:61; प्रेरितों 8:25. [5]यूहन्ना 5:24; 8:31, 37, 43, 51, 52; 14:23; 15:20. [6]पीटर टी. ओ'ब्रायन, कोलोसियंस, फिलेमोन, वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 44 (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1982), 208. [7]ई. के. सिम्पसन एंड एफ़. एफ़. ब्रूस, कमैंट्री ऑन द एपिस्टल टू द इफिसियंस एंड द कोलोसियंस, द न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1957), 283. [8]लोहसे 150. [9]प्लाइनी लैटर्स 10.96, एस 7; सम्राट ट्रोजन के नाम; एवरेट फ़र्ग्यूसन में उद्धृत (आस्टिन: स्वीट पब्लिशिंग कं., 1971), 81. [10]ओ'ब्रायन 209-10. सिम्पसन एंड ब्रूस, 284, एन 118 भी देखें; एच. सी. जी. माउल, द एपिस्टल टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन, द कैम्ब्रिज बाइबल फॉर स्कूल्स एंड कॉलेजिज (कैम्ब्रिज: यूनिवर्सिटी प्रैस, 1893; रिप्रिंट 1902), 129-30.

[11]जे. बी. लाइटफुट, सेंट पॉल'स एपिस्टल्स टू द कोलोसियंस एंड टू फिलेमोन, संशो. (लंदन: मैकमिलन एंड कं., 1916), 226. [12]विलियम हैंड्रिक्सन, एक्सपोज़िशन ऑफ़ कोलोसियंस एंड फिलेमोन, न्यू टैस्टामैंट कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1964), 163-64. [13]बाउर, (2000), 1096. [14]वही। [15]ए. टी. रॉबर्टसन, पॉल एंड द इंटलेक्चुअल्स: द एपिस्टल टू द कोलोसियंस, संशो. एवं संपा. डब्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (नैशविल्ल: ब्रॉडमैन प्रैस, 1959), 112, एन. 3. [16]द न्यू इंटरनैशनल डिक्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट थियोलॉजी, संपा. कौलिन ब्राउन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन प्रैस, 1978), 3:670 में के. एच. बार्टल्स, ''साम्स।'' [17]वही, 671. [18]थियोलॉजिकल डिक्शनरी ऑफ द न्यू टैस्टामैंट, संपा. गरहर्ड फ्रैड्रिक, अनु. व संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1971), 8:499, एन. 73 में गरहर्ड डेलिंग, ''*humnos, humneō, psallō, psalmos*.'' [19]ओ'ब्रायन 209. [20]मेर्विन आर. विन्सेंट, वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1946), 3:269-70.

[21]आक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी, 2रा संस्क., अंक 1 (1989), एस. वी. ''ए कैपेला।'' [22]देखें एम. सी. कुर्फीस, इंस्ट्रूमेंटल म्यूजिक इन द वरशिप ऑर द ग्रीक वर्ब सालो फिलोलॉजिकली एण्ड हिस्टॉरिकली एग्जामिन्ड (नैशविल्ले: गॉस्पल एडवोकेट कं., 1950), 146, 177, 190, 194. [23]यह हवाला क्लासिकल ग्रीक का है, जैसा कि LXX में मिलता है। [24]वाल्टर बाउर,, ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर, 2रा संस्क., संशो. व संपा. विलियम एफ़. अर्ंट एंड एफ़ विल्बर गिंगरिच, संशो. एवं संपा. विलियम एफ. अर्ंट और विलबर गिंगरिच, संशो. व विस्तार फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस 1979), 3i; और बाउर (2000), 3ii. [25]बाउर, (1979), XX; और बाउर (2000), 33ii. [26]सी. जी. विल्के एंड विलिबल्ड ग्रिम, ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ़ द न्यू टैस्टामैंट, अनु. एवं संशो. जोसेफ़ एच. थेयर (एडिनबर्ग, स्कॉटलैंड: टी. एंड टी. क्लार्क, 1901; रिप्रिंट ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1977), 637. [27]वही, 1iii. [28]वही, 675. [29]वही। [30]रॉबर्ट ह्यूग बेनसन, बाय वट अथॉरिटी ?; जॉन चैपिन, सम्पा., द बुक ऑफ कैथोलिक कोटेशंस (लंदन: जॉन कालडर, 1956), 666 में उद्धृत।

[31]एडवर्ड एच. बिकरस्टेथ,''पीस, परफेक्ट पीस'' सॉन्ग्स ऑफ़ द चर्च, संक. व सम्पा., आल्टन एच. हावर्ड (वेस्ट मोनरो, लुइसियाना: हॉवर्ड पब्लिशिंग कं., 1977). [32]भजन संहिता 25:8; 34:8; 54:6; 69:16; 86:5; 100:5; 106:1; 107:1; 108:21; 118:1; 135:3; 136:1.